

अंक - 19 (4)

अक्तूबर-दिसम्बर 2015 Vol. 19 (4)

October - December 2015

निदेशक की कलम से



From Director's Desk

Lac insect – host plant interaction: practical implications

Synergistic system of insect plant interaction has been exploited for many purposes. The interaction whether herbivory or insect-plant mutualism including pollination are best understood only when the implications of biochemical events and its physiological role is understood. The concept becomes more important when the interaction results

in an economic gain for the mankind. Many currently available pharmaceuticals including opium, aspirin, cocaine, and atropine are derived from the secondary metabolites of plants which are used to protect themselves from herbivores. The concept of biological control agents in pest control wherein use of repellent companion planting, defensive live fencing, and 'obstructive-repellent' interplanting are making use of those compounds synthesised by plants as a defensive measures to act against its insect counterpart.

Lac resin, the only one of its kind from animal kingdom, is an example of such well exploited system. The resinous protective cover secreted by the lac insect is used for the benefit of human kind in form of paint, varnish, cosmetics and nutraceuticals etc. Very few insects like lac insect (Kerria lacca) spend their entire life cycle on specific host plants. Being sap sucking insects, they cause minimal direct tissue destruction by using a specialized mouth part, the stylet, to drain sap from the phloem sieve elements of the plants vascular tissue. Though heavy infestations of lac insect may cause chronic shortage of photosynthates and severely reduce the growth potential of the host-plant but managed population can be utilized for production of natural products without adversely affecting the host-plant. Phloem feeders, the group to which lac insects belong, display two sets of adaptations. First, linked to the high ratio of non essential: essential amino acids in phloem sap, these insects contain symbiotic microorganisms which provide them with essential amino acids - in lac insect also, a new strain of Wolbachia along with bacteriophage of Wolbachia and yeast like organisms have been detected. Second, the osmotic pressure of phloem sap and tolerance of the very high sugar content which is voided via honeydew. Secretion of honeydew provides some clues to the understanding of this peculiar phenomenon of plant-insect interaction. Nutrient composition of the plant sap in relation to the excretion of honeydew and qualitative and quantitative estimations of sap carbohydrates, amino acids, phenolics, vitamins, minerals, hormones etc. has been analyzed in some phloem feeders. In addition, selected enzymes considered significant in the host-plant interaction such as amino-



अनुसंधान की उपलब्धियां

लाख उत्पादन

उत्पादकता एवं गुणवत्ता सुधार

फूलों के रंग के लिए पलास के परिवर्तो के फ्लेवोन्वायड का मुल्यांकन

पलास (ब्युटिया मोनोस्पर्मा) के सिन्दुरी लाल (नारंगी लाल) रंग का फुल सुन्दर होते है, जो कभी-कभी नारंगी पीला एवं पीला रंग के साथ ये फूल ईंट जैसे लाल रंग से लेकर बिल्कुल सफेद रंग के भी होते है। पलास के फुलों में रंग की विविधता का आकालन एलुमिनियम नाइटेट विधि का प्रयोग कर कुल "लेवोन्वायड का मात्रत्मक विशलेषण कर लिया गया। अध्ययन से पता चलता है कि सिन्द्री लाल में "लेवोन्वायड अंश अधाकतम (80.21 मि.ग्रा./ली) था तथा उसके बाद क्रोम पीले रंग के फूल (43.92 मि.ग्रा./ली) तथा पीले फूल (23.14 मि.ग्रा./ली) का स्थान रहा। डुमरी, गिरीडीह से संग्रह सुनहले पीले फल में सबसे कम (21.9 मि.ग्रा./ली) "लेवोन्वायड अंश रिकार्ड किया गया। इससे प्रतीत होता है कि पलास के फुलों का रंग उसमे "लेवोन्वायड संश्लेषण के स्तर के कारण होता है।

(वैभव डी लोहोट)

नये संग्रह किये गए लाख कीटों का अण्विक अभिलक्षण वर्णन

मणिपुर, नागालैंड, असम एवं तमिलनाड के विभिन्न परिपालक पौधों से संग्रह किये गए लाख कीट के नमुनों का सीओ X1 मार्कर का उपयोग कर अभिलक्षण वर्णन किया गया। हाउसकिपींग जीनों के अभिलक्षण वर्णन के लिए लाख कीटों से डी एन ए को पृथ्यक किया गया एवं साइटोक्रोम ऑक्सीडेज जीन स्पेसिफिक प्रारंभकों के साथ प्रवर्धान विस्तारण किया गया। विस्तारित उत्पादों को 1% अगरोज जेल के साथ जाँचा गया तथा श्रृंखलाकरण के लिए भेज दिया गया। संग्रहित किये गए लाख कीटों की केरिया चीमेनसीस के साथ 89 से 90% समानता का पता चलता है, जबिक तिमलनाड (अल्वीजीया समन पर) से संग्रह किये गए लाख कीटों मे के. लैका से 90% समानता प्रदर्शित होती है।

(तिमलरसी के एवं ए मोहनसुन्दरम)

फूलों के रंग के लिए पलास परिवर्त्त में गूंठी बांधना

गिरीडीह (झारखंड) के खाकिकला एवं डुमरी ग्रामों से पीले रंग की

भिन्नता वाले पलास के फुलों के तीन परिवर्त्तो को गूंठी बांधने के लिए संग्रह किया गया। गुंठी बांधाने के लिए पौधा हारमोन जैसे टी-1 (आई बी ए 2000 पी पी एम: एन ए ए 1000 पी पी एम) एवं टी-2 (आई बी ए 1000 पी पी एम : एन ए ए 500 पी पी एम : काईनेटीन 50 पी पी एम) के साथ मुदा मिडिया (1 वर्मी कम्पोस्ट : 1 मृदा : 0.5 रूग्नम मॉस : 2 बालू) का दो उपचार किया



Fig.1. Comparison between plant hormone treatments: T1 (A) & T2 (B, C)

गया। गूंठी मई 2015 मे बांधा गया तथा चार माह बाद गूंठी को पौधो से काटा गया। प्रत्येक पौधो में प्रत्येक उपचार मे 10 गूंठी बांधा गया। कुल 60 गूंठी बांधी गई, जिसमें से 31 में जड स्नलतापूर्वक निकले। गुंठियों में टी2 उपचार के परिणाम 19 संनलता (61%) के साथ पहला रहा जबिक 12 सफलता (38%) के साथ टी। का स्थान दूसरा रहा। (चित्र-1)

(वैभव डी लोहोट)

Research Highlights

Lac production

Productivity and quality improvement

Total flavonoid determination in variants of Palas for flower colour

Palas (Butea monosperma) bears beautiful scarlet (orange-red) coloured flowers; ranging from brick-red to pure white with several shades of intermediate orange-yellow and yellow colours are also seen. Colour variation in *Palas* flowers was estimated by quantitative analysis of total flavonoids using aluminium nitrate method. The study revealed that scarlet recorded the highest flavonoid content (80.21 mg/L) followed by flower having chrome yellow colour (43.92 mg/L) and yellow flower (23.14 mg/L. The lowest flavonoid content (21.90mg/L) was recorded in Golden Yellow flowers collected from Dumri, Giridih. It seems that the variation in Palas flower colour could be due to the level of flavonoid synthesis in the flowers.

(VD Lohot)

Molecular characterization of newly collected lac insects

Lac insect samples collected from Manipur, Nagaland, Assam and Tamil Nadu on different host plants were characterized using cox1 marker. For characterization of housekeeping genes, DNA was isolated from lac insects and amplified with cytochrome oxidase gene specific primers. The amplified products were checked on 1% agarose gel and sent for sequencing. Lac insects collected revealed 89 to 99% homology with Kerria chinensis. Where as, lac insects collected from Tamil Nadu (on Albizia saman) showed 99% homology with K. lacca.

(K Thamilarasi and A Mohanasundaram)

Air layering in Palas variants for flower colour

Three variants of Palas having flower colour variation for yellow colour

from Khakikala and Dumri villages of Giridih (Jharkhand) were selected for air layering. Two treatments of plant hormones viz., T1 (IBA 2000ppm: NAA 1000ppm: Kinetin 100ppm) and T2 (IBA 1000ppm: NAA 500ppm: Kinetin 50ppm) with one soil media (1 vermicompost: 1 Soil: 0.5 sphagnum moss: 2 Sand) were used for air layering. The air layering was carried in the month of May 2015 and air layers were cut

from the plants after four months. 10 air layers of each treatment were carried out in each plant. Total 60 air layers were done out of which 31 air layers successfully rooted. The treatment T2 gave high rooting performance over T1, T2 has given 19 successful (61%) air layers whereas T1 has given 12 successful (38%) air layers (Fig. 1).

(VD Lohot)



झारखंड मे नया लाख परिपालक रिकॉर्ड किया गया

अनगड़ा, रॉची के पुटादाग ग्राम से लीया क्रीस्पा (चित्र-2) पौधो की खोज की गई तथा रॉची के जोन्हा ग्राम में मिलेसिया इ"सटेंसा (बेंथ) पर कुसमी लाख देखा गया। (चित्र-3)

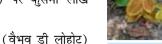


Fig. 2. Leea crispa plant at Putadag village

Fig.3. Kusmi lac on Millettia extensa (Benth.)

New record of lac host from Jharkhand



Leea crispa plant (Fig. 2) was discovered in Putadag village, Angarah, Ranchi and Kusmi lac was observed on Millettia extensa (Benth.) at Johna village, Ranchi (Fig. 3).

(VD Lohot)

उत्पादन पद्धति प्रबंधन

कुसुम के बिचड़े की वृद्धि पर उर्वरक के प्रयोग, अजोटोबैक्टर, फॉस्कोबैक्टेरीन एवं वी ए एम के बीच संचारण का प्रभाव

अकार्विनिक उर्वरकों के प्रयोग एवं पी जी पी आर संचारण से प्रभावित होने वाले प्ररोह का आधार व्यास, प्ररोह की लम्बाई, जड़ का वजन, प्ररोह का वजन, पत्ती का वजन इत्यादि जैसे पौधा वृद्धि मानदंडों का सितम्बर मे किए गए विभिन्न उपचारों का परिणाम मिश्रित रहा। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से ज्यादातर वृद्धि गुणों पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, जबिक अजोटोबैक्टर, फॉस्फोबैक्टेरीन जैसे पी जी पी आर एवं वैसिकुलर आर्बस्कुलर माइकोहींजी का संचारण (बीज) से ज्यादातर पौधा वृद्धि गुणों मे उल्लेखनीय कमी आई। इन पी जी पी आर के संचारण के कारण प्ररोह के वजन में कमश: 41, 45 एवं 45 प्रतिशत की दर से कमी आई। इसी तरह का रूझान अन्य वृद्धि मानकों मे भी देखा गया।

लाख की पारिस्थितिकी में त्रीस्तरीय अन्योन्य किया

सतह निष्कर्षण, आइस सोक्स्हेलेशन एवं हेड स्पेस जैसी तीन विभिन्न विधियों का उपयोग कर पौधों से वाष्पशील सार का संग्रह कर लाख परिपालक पौधा एफ सेमियालता का सेमियोकेमिकल अधययन किया गया। सतह निष्कर्षण, आइस सोक्स्हेलेशन के लिए डाइक्लोरोमिथेन तथा हेड स्पेस विधि के लिए हेक्सेन का उपयोग कर लाख संचारित एवं गैर संचारित (नियंत्रण) पौधो से पहले, सातवें एवं 30वें दिन पौधा सार का संग्रह किया गया। वाष्पशील सामग्री को हेक्सेन का उपयोग कर लाख कीट से जुड़े उत्पाद जैसे मोम, राल, लाख कीट का पूरा शरीर, मधु रस, लाख रंजक एंव लाख शिशु से संग्रह किया गया। यौगिकों की पहचान के लिए निकाले गए नमूने का जी सी एम एस का उपयोग कर विशलेषण किया गया। लाख संचारित एवं गैर संचारित एफ सेमियालता सार से वाष्पशील हाइड्रोकार्बन यौगिक को रिकॉर्ड नहीं किया जा सका। हालांकि लाख मोम, लाख राल, सम्पूर्ण लाख कीट, लाख रंजक एवं लाख शिशु से रासायनिक यौगिकों को रिकॉर्ड किय गया। लाख से जुड़े उत्पादों से टेट्राटिकोनेट, हैक्साकोसेन, टेट्राडिकान्वायक अमल, पाल्मिटोलिक अम्ल एवं ऑक्टोकोसानोल जैसे रासासनिक यौगिकों को सामान्य तथा रिकॉर्ड किया गया।

(ए मोहनसुन्दरम)

बीहनलाख की गुणवत्ता का अध्ययन

जैठवी 2015 की अवधि में 25,50,75 एवं 100 प्रतिशत लाख पपड़ी वाले

विभिन्न गुणवत्ता के बीहनलाख का गुणवत्ता अधययन किया गया। कटाई के पाँचवे दिन अधिकतम लाख पिल्लू निकले तथा उनका निकलना 23वें दिन तक जारी रहा। परन्तु ज्यादातर पिल्लू कटाई के 13 दिन के अन्दर ही निकल गए।

(ए मोहन सुन्दरम एवं केवल कृष्ण शर्मा)

tobacter, Phosphobacterin and VAM on growth of kusum seedlings

Production System Management

Plant growth parameters *e.g.* basal shoot diameter, shoot length, root weight, shoot weight, leaf weight *etc.* as affected by application of inorganic fertilizers and PGPR inoculation showed a mixed response among different treatments during September. Application of chemical fertilizers did not affect most of the growth attributes, whereas PGPRs *e.g. Azotobacter*, Phosphobacterin and Vasicular Arbuscular Mycorrhizae inoculation (seed) reduced most of the plant growth attributes significantly. Reduction in shoot weight was to the tune of 41, 45 and 45 percent respectively due to inoculation by these PGPRs. Similar trend was observed in other growth parameters also.

Interaction effect of fertilizer application and seed inoculation of Azo-

(S Ghosal)

Tritrophic interaction in lac ecosystem

Semiochemcial studies in lac host plant, F. semialata were conducted by collection of volatile extract from the plants using three different methods viz., surface extraction, Ice soxhelation and head space. Plant extracts were collected at 1st, 7th, and 30th days after lac inoculated and lac un-inoculated (control) plants using dichloromethane for surface extraction, Ice soxhelation and hexane for head space method. Volatiles were collected from lac insect associated products viz., wax, resin, lac insect whole body, honey dew, lac dye and lac crawlers using hexane. The extracted samples were analyzed using GC MS to identify the compounds. Volatile hydrocarbon compound could not be recorded from lac inoculated and lac un-inoculated F. semialata extract. However, chemical compounds were recorded from lac wax, lac resin, lac insect whole, lac dye and lac crawlers. Chemical compounds viz., Tetratricontane, Hexacosane, Tetradecanoic acid, Palmitoleic acid and Octocosanol were more commonly recorded from lac associated products.

(A Mohanasundaram)

Broodlac quality study

Broodlac quality study was done with different quality of broodlac viz., 25, 50, 75 and 100 per cent lac encrustation during jethwi,

2015. Maximum lac crawlers emerged on 5th day after harvesting of broodlac and crawlers continued to emerge upto 23 days after harvesting of broodlac. But, most of the crawlers had emerged within 13 days after harvesting of broodlac (Fig. 5).

(A Mohanasundaram and KK Sharma)

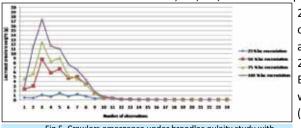


Fig.5. Crawlers emergence under broodlac qulaity study with different quality of broodlac during jethwi 2015 on ber



लाख कीट एवं लाख परिपालकों के लिए सर्वे

तिमलनाड के चार उत्तरी जिलों जैसे वेल्लोर, तिरीवन्नामलाई, कांचीपुरम एवं तिरूवल्लुअर मे 28 अक्तूबर से 02 नवम्बर 2015 के दौरान लाख कीट एवं पि. रपालक पौधों की उपलब्धता के लिए सर्वे किया गया। पूर्वी घाट क्षेत्र के जवाघु हिल्स, कवलूर वन क्षेत्र, अलंगयम, येलागिरी फॉरेस्ट हिल्स एवं तिरूयानी हिल्स का भ्रमण किया गया। सर्वे वाले क्षेत्र में लाख परिपालक पौधो जैसे अल्बीजीय

समन, ए लेब्बेक, अकेशिया ऑरिकुलीफॉर्मिस, ब्यूटिया मोनास्पर्मा, फाइकस प्रजाति, मेलालोटस फिलीपेन्सीस, पेल्ट. फोरम फेर्रूजिनीयम, श्लीचेरा ओलिओसा एवं जीजीफस मॉरिसीयाना पाए गए । पहली वार वेल्लोर के जवाघु हिल्स के आस-पास के क्षेत्र में रेन ट्री (ए. समन) चित्र-6 तथा

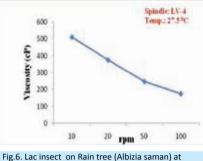


Fig.6. Lac insect on Rain tree (Albizia saman) at Vellore, Tamil Nadu

O-H Stretching

पीपल (एफ रेलिजिओसा) चित्र-7 पर लाख कीट (अपरिपक्व) देखा गया एवं आगे के अधययन के लिए संग्रह किया गया।

(ए मोहनसुन्दरम एवं वैभव डी लोहोट)

C-H Stretching

प्रसंस्करण एवं उत्पाद विकास

झींगन गोंद (लैनिया कोरोमंडेलिका) का भौतिक रासायनिक अभिलक्षण वर्णन

बिलासपुर (छत्तीसगढ़) से प्राप्त झींगन गोंद (श्रेणी-।, ।। एवं ।।।) के नमुने का तुलनात्मक अधययन किया गया तथा कार्यकारी वर्ग की

उपस्थिति के लिए जॉच किया गया।। झींगन ।,।। एवं ।।। के एफ टी आई आर ग्राफ (चित्र-8ए, 8बी एवं 8सी) से पता चलता है कि अन्तर एवं अन्तरा-आण्विक हाइड्रोजन वॉड के कारण 3393-3402 से मी-1 के बीच ओ-एच स्ट्रेचिंग अवशोषण समान विस्तृत क्षेत्र के. अवशोषण होता है। गोंद मे सी-एच स्टेचिंग अवशोषण के कारण 2913 से मी-1 के आस-पास बैंड होता है जबकि यूरोनिक अम्ल के मुक्त कार्वोक्सिलेट वर्ग की उपस्थिति के कारण 1616-1636 से. मी.-1 बैंड होता है।

> (सी एच. जामखोकाई माटे एवं नन्द किशोर ठोंबरे)

Survey for lac insects and lac hosts:

Four northern districts of Tamil Nadu viz., Vellore, Tirivannamalai, Kanchipuram and Tiruvalluar were surveyed for availability of lac insect and host plants from October 28 to November 02, 2015. The regions of Eastern Ghats viz., Jawadhu hills, Kavalur forest area, Alangayam, Yelagiri forest hills and Thiruthani hills were covered. Lac host plants, Albizia saman, A. lebbeck, Acacia auriculiformis,



Fig.7. Lac insect on Pipal tree (Ficus religiosa) at Vellore, Tamil Nadu.

Butea monosperma, Ficus spp, Mellalotus philippensis, Peltophorum ferrugenium, Schleichera oleosa, and Ziziphus mauritiana were found in surveyed areas. Lac insect (immature) was observed for the first time in the peripheral areas of lawadhu hills at

Vellore on Rain tree (A. saman) (Fig. 6) and Pipal (F. religiosa) (Fig. 7) and were collected for further study.

(A Mohanasundaram and VD Lohot)

Processing and product development Physico-chemical characterization of *Jhingan* gum (Lannea coromandelica)

Samples of *jhingan* gum (grade I, II and III) obtained from Bilaspur, (Chhattisgarh) were comparatively studied and tested for the

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Fig. 8a: FT-IR graph of jhinagn I

C-H Stretching from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

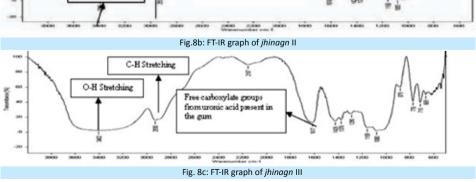
Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free carboxylate groups from uronic acid present in the gum

Free ca



presence of functional groups. FT-IR graphs (Fig. 8a, 8b and 8c) of jhingan I, II and III revealed the broad areas of absorption 3393-3402 between cm⁻¹ corresponding O-H stretching to absorption due to inter and intramolecular hydrogen bonds. Bands around 2931 cm⁻¹ is due to C-H stretching absorption whereas 1616-1636 cm⁻¹ bands are due to the free carboxylate groups from uronic acid present in the gum.

(Ch. Jamkhokai Mate and N Thombare)



अकेशिया गोंद मे एमीनो अम्ल एवं श्यानता का सहसंबध

विभिन्न स्थानों से संग्रह किए गए अकेसिया निलोटिका, अकेशिया सेनेगल तथा मर्क इन्डिया लि. एवं हाइमिडिया से कय किये गए अकेसिया गोंद का 27 से. पर डिजीटल ब्रुकिफल्ड विस्कोमीटर (मॉडेल:एल वी डी वी-॥+प्रो (स्पिंडल नम्बर एल वी 2/एल वी-4) का उपयोग कर श्यानता का निर्धारण किया गया, जिसमें सियर रेट स्वतंत्र एवं सांद्रण आधारित हाने के चलते ए. निलोटिका गोंद म्राव श्यानता के साथ न्युटोनिसन व्यवहार प्रकट करता है। बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के गोंद नि:म्राव के 40% घोल की श्यानता 10% घोल (48.8) की तुलना में उच्चतम सी पी मान (284.9) दर्शाता है। ए. सेनेगल गोंद नि:म्राव एवं मर्क हाईमीडीया से प्राप्त अकेसिया गोंद मे भी कम श्यानता होती है। (चित्र-9) इसके विपरीत सुडान (सी ए जेड आर आई,

जोधापुर) (इसी न.-01332/84, सुडान के उत्तर कोड्रोफैन प्राप्त के प्रोवेनेन्स की उत्पत्ति) का ए. सेनेगल का 5% घोल उच्च सी पी मान (509.45) दर्शाता है एवं गैर न्युटोनियन सीयर थीनींग/मिथ्या प्लास्टिक अभिलक्षण (चित्र-10) दर्शाता है। आर पी एच पी एल सी द्वारा गोंद के नमूने का एमीनों अम्ल विश्लेजण में ग्लाईसीन केवल सुडान (सी ए जेड आर आई, जोध पुर) के ए. सेनेगल में पाया गया तथा अध्ययन के दौरान संग्रह एवं

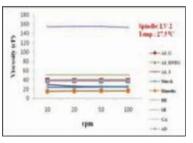


Fig. 9: Viscosity of 20.0 % solution of *Acacia* gums collected from different places.

[ASG, Acacia senegal (Gujarat); ASIINRG, Acacia senegal (IINRG Farm); ASJ, Acacia senegal (Jodhpur); BR, Acacia nilotica (Bilaspur); SR, Acacia nilotica

(Sitapur); GA, Acacia nilotica (Gondia); AD,

Acacia nilotica (Anand).1

विश्लशण किये गए गोंद के अन्य नमूनों की तुलना में बहुत अधिक मात्र (388. 67 मि.ग्रा./ग्रा) में पाया गया। उसी तरह प्रोलोइन एमीनों अम्ल की भी उच्ची उपस्थित (गोंद के प्रति ग्राम का 31.31 मि.ग्रा.) थी। इससे ऐसा लगता है कि श्यानता एवं ग्लाईसीन तथा प्रोलाइन एमीनों अम्ल अंश मे कुछ सहसंबंध है। इस निश्कर्श से यह पता चलता है कि गोंद मे ग्लाईसीन, प्रोलाइन एवं अर्गीनाइन अमीनों अम्ल की उपस्थित से श्यानता बढ़ती है, जैसे ग्वार गोंद (साएमॉपिसस ट्रेट्रागोनोलोबस) जिसमें अमीनों अम्ल होता है तथा बहुत ज्यादा श्यानता होता है।

(माहताव जाकड़ा सिद्दीकी, अर्णव राय चौधरी एवं तमिलरसी के)

Co-relation of amino acids and viscosity in Acacia gums

Viscosity of Acacia nilotica, Acacia senegal, collected from different places, and gum acacia, procured from Merck India Ltd. and Himedia, was determined using Digital Brookfield Viscometer (Model: LVDV-II+Pro; spindle number LV-2/ LV-4) at 27.5 OC, wherein all the A. nilotica gum exudates showed Newtonian behavior with viscosity being shear rate independent and concentration dependent, as the viscosity of 40.0 % solution of gum exudates from Bilaspur (Chhattisgarh) displayed highest cP value (284.9) in comparison to 10.0 % solution (48.8). A. senegal gum exudates and gum acacia from Merck and Himedia also displayed low viscosity

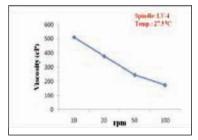


Fig. 10: Viscosity of 5.0 % solution of *Acacia* senegal, Sudan (CAZRI, Jodhpur)

(Fig. 9). On the contrary, 5.0 % solution of A. senegal, Sudan (CAZRI, Jodhpur) (EC Number, 01332/84; origin of provenance, North Kodrofan province of Sudan) displayed fairly high cP value (509.45) and exhibited non-Newtonian shear thinning / pseudo plastic

characteristics (Fig. 10). In amino acid analysis of gum samples by RP-HPLC, glycine was found to be present only in A. senegal, Sudan (CAZRI, Jodhpur) and that too in a very high quantity (388.67 mg/g of gum) in comparison to other gum samples collected and analyzed during the study. Similarly, proline amino acid was also present on the higher side (31.31mg/g of gum). There appears to be some correlation between viscosity and the glycine and proline amino acid contents. This finding also corroborates that the presence of higher percentage of glycine, proline and arginine amino acids in gums enhances their viscosity, as in the case of guar gum (Cyamopsis tetragonolobus) which possesses these amino acids and a very high viscosity.

(MZ Siddiqui, AR Chowdhury and Thamilarasi K)

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

शैक्षणिक एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम

क्र. सं.	प्रशिक्षण का नाम	अवधि	पाठ्यक्रमों/शिविरों की संख्या	प्रतियोगियों की संख्या
1.	लाख की वैज्ञानिक खेती, प्रसंस्करण एवं उपयोग पर प्रक्षिशक प्रशिक्षण कार्यक्रम			
2.	लाख की वैज्ञानिक खेती, प्रसंस्करण एवं उपयोग पर कृजक प्रशिक्षण कार्यक्रम			
3.	लाख की खेती का प्रोत्साहन/ पूरक प्रक्षेत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम			

Transfer of technology

Education and capacity building programmes

SI. No.	Name of training programme	Dura- tion	No. of courses /camps	No. of participants
1.	Trainer's training programme on scientific methods of lac cultivation	One week		
2.	Farmers training programme on scientific methods of lac cultivation processing and utilization	One week		
3.	On farm motivational/supplementary training programme on scientific lac cultivation	1-2 days		

4.	लाख की खेती का परिसर में एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम		
5.	लाख की खेती पर किसान गोष्ठी/कार्यशाला/शैक्षणिक कार्यक्रम		
6.	प्रदर्शनी/किसान मेला में सहभागिता		

(अनिल कुमार जायसवाल)

आयोजन

प्रा.रा.गों. के एच पी वी ए पर नेटवर्क परियोजना के समन्वय समिति की 7 वीं बैठक

प्राकृतिक राल एवं गोंद के निष्कर्षण, प्रसंस्करण एवं मृत्यववर्द्धन पर नेटवर्क परियोजना के समन्वय समिति की 7 वीं बैठक टी एन ए यु वन महाविद्यालय एवं अनुसंधाान संस्थान, मेहुपलयम, तिमलनाड मे 27-28 अक्टूबर 2015 को आयेजित किया गया। उद्घाटन से पहले सभी गणमान्य अतिथियों प्रधान अन्वेषकों, सह प्र. अन्वेषकों, ने टी एन ए यु वन महाविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान के फार्म में इमली के विभिन्न जननद्रव लगाए गए। उद्घाटन सत्र की अधयक्षता डॉ सी आर आनन्दकुमार, कुलपित (कार्यवाहक), टी एन ए यु, कोएम्बतूर ने किया तथा डॉ एम महेश्वरण, निदेशक अनुसंधान(टी एन ए यु. कोएम्बतुर (डॉ के के सुरेश, डीन (वन), ए सी एवं आर आई, मेट्रपलयम(डॉ रंगनातन रंमणि, प्र. वै. एवं विशेष कार्य अधि. (ओ एस डी), भा.क्.अन्.प.सं., झारखंड(प्रा.रा.गों. के एच पी वी ए पर नेटवर्क परियोजना के परि. समन्वय तथा परियोजना केन्द्र के प्रधा. अनवे., सह प्रधाा. अनवे. एवं आर ए ने भाग लिया। अपने उद्घाटन भाषण मे डॉ सी आर आनन्दकुमार ने कहा कि प्राकृतिक राल एवं गोंद जैसे द्वितीयक पौध उत्पादों पर जोर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रा.रा.गों. के निर्यात एवं आयात को सुदृढ किया जाना चाहिए तथा वाणिज्य व्यापार एवं प्रा.रा.गों. के टिकाउ उत्पाद के बीच प्रौद्योगिकी संबंधी जागरूकता लानी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रा.रा.गों. के अनसंधान को नई दिशा देने के लिए टी एन य के साथ ज्यादा सह-प्रचालन स्थापित किया जाना चाहिए। उन्होंने प्राकृतिक राल एवं गोंद उत्पाद प्रजातियों का बहुस्थानीय परीक्षण करने तथा प्रा.रा.गों. के मैलिक अनुसंधान को गति देने के लिए इसके औषधीय गुणों की खोज पर जोर दिया गया। बैठक के तकनीकी सत्र की अधयक्षता डॉ रंगनातन रमणि तथा सह अधयक्षता डॉ निरंजन प्रसाद, परियोजना समन्वयक, भा.प्रा.रा.गों. सं., रॉची ने की, जिसके अन्तर्गत नेटवर्क परियोजना केन्द्र के प्रधान अन्वेषकों ने वर्ष 2014-15 की प्रगति रिपोर्ट तथा वर्ष 2015-16 की तकनीकी रिपार्ट प्रस्तुत की। बैठक का समापन सत्र 28 अक्तूबर को आयोजित किया गया जिसकी अधयक्षता डॉ रमणि ने की। इस सत्र मे अन्तिम अनुशंसा प्रस्तुत की गई। धान्यवाद ज्ञापन डॉ ए बालासुब्रमनिअम, प्रधान अन्वेषक टी एन ए यु- एफ सी एवं आर यु ने किया।

(निरंजन प्रसाद)

संस्थान मे विश्व मृदा दिवस का आयोजन

संस्थान में 05 सितम्बर, 2015 को विश्व मृदा दिवस मनाया गया। श्री रामकुमार पाहन, मा. विधायक, खिजरी इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा श्रीमती आरती कुजूर, सदस्य रॉची जिला परिषद्, विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। इस आयोजन का मुख्य आकर्षण लाभुक किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड बांटना

4.	In campus orientation programme on scientific lac cultivation (in campus)	One day	
5.	Participation in <i>Kisan Gosthi/</i> Workshop/ Educational programme on lac cultivation		
6.	Participation in Exhibition/ Kisan Mela		
	Total		

(A K Jaiswal)

Events

7th Coordination Committee Meeting of Network Project on HPVA of NRG

The 7th Coordination Committee Meeting of Network Project on Harvesting, Processing & Value Addition of Natural Resins and Gums was held at the TNAU-Forest College and Research Institute, Mettupalayam, Tamil Nadu during October 27-28, 2015. Before inauguration, Dignitaries, PIs and Co-PIs planted different germplasm of Tamarind in the farm of TNAU-Forest College and Research Institute. The inaugural session of the meeting was chaired by Dr. C.R. Anandha Kumar, Vice-Chancellor (Acting), TNAU, Coimbatore and attended by Dr. M. Maheswaran, Director of Research, TNAU, Coimbatore; Dr. K.K. Suresh, Dean (Forestry), FC & RI, Mettupalayam; Dr. R. Ramani, P.S. & Officer on Special duty (OSD) IARI, Jharkhand; Project Coordinator of Network Project on HPVA of NRG; Pls, Co-Pls and RAs of Project Centres. Dr. C.R. Anandha Kumar in his opening remark said that emphasis should be given on the secondary plant products like NRGs. He also mentioned that export and import of NRGs should be strengthened and technology awareness may be introduced between commerce and sustainability of NRGs production. He also suggested that more co-operations should be established with TNAU for adding new dimensions in the research on NRGs. He emphasized that multi-locational trials of newer gums and resins producing species should be taken up. He further stressed upon to explore the medicinal properties of gums and resins to boost the basic research on NRGs. The technical session of the meeting was chaired by Dr. R. Ramani, P.S. & OSD, IARI, Jharkhand and Co-chaired by Dr. N. Prasad, Project Coordinator, IINRG, Ranchi, in which PIs of Network Project Centres presented their progress for the year 2014-15 and Technical Programme for 2015-16. Concluding session of the meeting was organized on Oct.28, 2015, which was chaired by Dr. R. Ramani, in which final recommendations were presented followed by vote of thanks by Dr. A. Balasubramanian, PI, TNAU-FC&RI.

(N Prasad)

Institute Celebrates World Soil Health Day

World Soil Health Day was observed at the Institute on December 05, 2015. Shri Ram Kumar Pahan, Hon'ble Member of Legislative Assembly, Khijri was the Chief Guest of the Occasion and Ms Arti Kujur, Member Zila Parishad, Ranchi was the Special Guest on the occasion. Main attraction of the function was distribution of soil



था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि द्वारा कुल 251 मृदा स्वास्थ्य कार्ड बांटे गए। झारखंड में मृदा स्वास्थ्य एवं पोषक प्रबंधन विषय पर डॉ सोमेन घोषाल ने व्याख्यान दिया। किसानों, अतिथियों, संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रम मे भाग लिया।

Coor Castion Committee meeting

health cards to the beneficiary farmers. A total of 251 soil health cards were distributed by the Chief Guest and the Special Guest. A lecture on Soil Health and Nutrient Management in Jharkhand was delivered by Dr S. Ghosal, PS. Farmers, dignitaries, staff members of the Institute attended the programme.

(S Ghosal)

(सोमेन घोषाल)

प्रकाशन एवं प्रचार

अनुसंधान आलेख

- सिंह ए के, जायसवाल ए के, भटाचार्य ए, सिंह आर के, सिंह ए के, मोनोबुललाह मो. एवं घोषाल एस 2015। मैक्सिमाइजेशन आफॅ प्रासेफिटैबि. लिटी थ्रो लैक प्रोडक्शन ऑन "लेमिंजीया सेमियालता-अ बुसी लैक होस्ट। वेजेटोस 28(2):219-22।
- सिंह ए के, घोषाल एस एवं जायसवाल ए के 2015। इंक्ट ऑफ फो.
 टिंफाइड लैक मड अप्लीकेशन ऑन ग्रोथ एन्ड "लावार प्रोडक्शन ऑफ रोज।
 इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रोपिकल एग्रीकल्चर 33 (2) 1023-25।
- सिंह आर के एवं घोषाल एस 2015। इफेक्ट ऑफ मल्च ऑन स्वायल म्यायस्चर, टेंप्रेंचर, वीड इन्फेस्टेशन एन्ड रंगीनी लैक इल्ड ऑफ पलास (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा) इन झारखंड। द बायोस्कैन 10 (3) 1233-36।
- सिंह बी आर एवं सिद्दीकी एम जेड 2015। एन्टीमाइक्रोबियल एक्टीविटी आफॅ कॉमीफोरा विघटी गम (गुग्गल गम) इक्ट्रैक्ट अगेंस्ट ग्राम पोसीटिव एन्ड ग्राम नेगेटिव बैक्टिरीया। जर्नल ऑफ माइक्रोबायोलॉजी एन्ड एन्टीमा. इक्रोबियल एजेन्टस, 1 (2) 36-39।
- सिंह बी आर, दुबे एस एवं सिद्दीकी एम जेड 2015। एन्टीमाइक्रोबियल एक्टीविटी ऑफ नेचुरल इंडिबल गम्स। वर्ल्ड जर्नल आफॅ फार्मास्यूटिकल साईसेस 3(11) 2217-21।
- विंशी पी के, नायक नटाशा, सरकार पी सी, साहु उपाली, नाइनन जॉर्ज एवं रिवशंकर सी एन 2015। कम्पेरेटिव इवैलुएशन ऑफ गम अरिवक कोटिंग एन्ड वैक्यूम पैकेजिंग ऑन चिल्ड स्टोरेज कैरेक्टेरिस्टिक्स आफॅ इन्डियन मैकेरेल (रास्ट्रेलिगर कनगुर्ता) जर्नन ऑफ फुड साईंस, टेक 3 दिसम्बर 2015

पुस्तक अंश

- मोहनसुन्दरम ए एवं मोनोब्रुललाह मो 2015। लैक इन्सेट लाक स्टाइल, लैक क्रॉप सइकिल एन्ड लैक रिलेटेड टर्मीनोलॉजी। कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.कृ.अनु.प.-भा.प्रा.रा.गों. सं., रॉची में, पृष्ठ 10-18।
- मोनोब्रुललाह मो, मोहनसुन्दरम ए एवं वर्मा श्वेता 2015। रंगीनी लैक कल्टीवेशन ऑन पलास (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा) एन्ड बेर (जीजीफस मॉरी. सियाना) कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.कृ.अनु.प.-भा.प्रा.रा.गों.सं., रॉची में, पृष्ठ 75-79।
- शर्मा के के, 2015 कलेक्शन एन्ड कन्जरवेशन ऑफ लैक इन्सेक्ट एन्ड होस्ट प्लान्ट डायवर्सिटी। कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.कृ.अनु.प.-भा.प्रा.रा.गों.सं., रॉची में, पृष्ठ 33-40।
- शर्मा केवल कृष्ण-2015। मैनेजमेंट आफॅ ब्रुडलैक फार्मा। कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन

Publication and publicity

Research articles

- Singh AK, Jaiswal AK, Bhattacharya A, Singh RK, Singh AK, Monobrullah Md. and Ghosal S. 2015. Maximization of profitability through lac production on *Flemingia semialata*- a bushy lac host. VEGETOS 28 (2): 219-22
- Singh AK, Ghosal S and Jaiswal AK. (2015) Effect of fortified lac mud application on growth and flower production of rose. International Journal of Tropical Agriculture 33 (2): 1023-25.
- Singh RK and Ghosal S. 2015. Effect of mulch on soil moisture, temperature, weed infestation and rangeeni lac yield of palas (Butea monosperma) in Jharkhand. The Bioscan 10(3): 1233-1236
- Singh B R and Siddiqui M. Z. 2015. Antimicrobial activity of Commiphora wightii gum (guggul gum) extract against Gram positive and Gram negative bacteria. Journal of Microbiology and Antimicrobial Agents, 1(2): 36-39.
- Singh B R, Dubey S and Siddiqui M Z. 2015. Antimicrobial activity of natural edible gums. World Journal of Pharmaceutical Sciences, 3(11): 2217-21.

Book Chapters:

- Mohanasundaram A and Monobrullah Md. 2015. Lac insect life cycle, lac crop cycle and lac related terminology. In: Kumar Alok, Jaiswal A K, Singh AK and Yogi R K (eds.), Advances in Lac Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 10-18 pp.
- Monobrullah Md, Mohanasundaram A and Verma Sweta. 2015. Rangeeni Lac Cultivation on Palas (Butea monosperma) and Ber (Ziziphus mauritiana). In: Kumar Alok, Jaiswal AK, Singh AK and Yogi RK (eds.), Advances in Lac Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 75-79 pp.
- Sharma KK. 2015. Collection and conservation of lac insect and host-plant biodiversity, In: Kumar Alok, Jaiswal A K, Singh Ak and Yogi R K (eds.), Advances in Lac Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 33-40 pp.
- Sharma KK. 2015. Management of broodlac farm, In: Kumar Alok, Jaiswal A K, Singh AK and Yogi R K (eds.), Advances in Lac

लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.कृ.अनु. प.-भा.प्रा.रा.गों.सं., रॉची में, पृष्ठ 107-1121

- सिंघल विभा, मीणा एस सी, शर्मा के के एवं रमणि आर 2015। लैक इन्टिग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम (एल आइ एफ एस) कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.कृ.अनु.प. -भा.प्रा.रा.गों.सं., रॉची में, पृष्ठ 96-106।
- शर्मा एस सी, प्रसाद एन एवं पांडेय एस के 2015। लैक प्रोसंसिंग ए विलेज लेवल इन्टरप्रेनियरसीप। कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.क्.अनु.प.-भा.प्रा.रा.गों.सं., रॉची में, पृष्ठ 131-139।
- पांडेय एस के. प्रसाद एन एवं शर्मा एस सी 2015। प्रोसेसिंग ऑफ लैक-सीड लैक, शेलैक, ब्लीच्डलैक एन्ड लैक डाई। कुमार आलोक, जायसवाल ए के, सिंह ए के एवं योगी आर के (संपादक) एडवान्सेस इन लेक प्रोडक्शन, प्रोसेसिंग, प्रोडक्ट डेवलेपमेंट एन्ड वैल्यु एडीशन भा.कृ.अनु.प.-भा.प्रा.रा.गों. सं., रॉची में, पुष्ठ 118-130।

संस्थान के प्रकाशन

सुश्री डोरोथी नोरीस मेमोरियल लेक्चर पुस्तिका एन इकोलॉजीकल अप्रोच फॉर इकोनॉमिकल डेवलपमेंट थ्रो नेचुरल रेजीन्स एन्ड गम्स, पृष्ठों की संख्या-12 प्राकृतिक राल एवं गोंद, भा.कृ.अनु.प.-भा.प्रा.रा.गों.सं. समाचार पत्रिका, जुलाई-सितम्बर 2015 अंक-19(3), पृष्ठों की संख्या-08

संकलन, संपादन एवं निर्माण

डॉ महताब जाकरा सिद्दीकी डॉ आलोक कुमार श्री शिराज सलीम भट्ट डॉ अंजेश कुमार

अनुवाद

डॉ अंजेश कुमार

छाया चित्र

श्री रमेश प्रसाद श्रीवास्तव

प्रकाशक

डॉ केवल कृष्ण शर्मा

निदेशक

भा.कृ.अनू.प.-भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, राँची-834 010 झारखण्ड

दूरभाष : 0651-2261156 (निदेशक)

फैक्स : 0651-2260202 ई-मेल : iinrg@ilri.ernet.in

: director.iinrg@gmail.com

सम्पर्क करें : http//ilri.ernet.in

पदोन्नति

- श्री दिलीप कुमार सिंह, त.अ. 01.01.2015 से व.त.अ. बनाए गए।
- श्री अनिल कुमार सिंह, त.अ. 01.01.2015 से व.त.अ. बनाए गए।
- बिनोद कुमार, त.अ. 27.12.2014 से व.त.अ. बनाए गए।
- श्री बी एस चौधरी, त. सहायक 01.07.2014 से व.त.सहायक बनाए गए।
- श्री मानदश्वर सिंह, त. सहायक 19.06.2014 से व.त.सहायक बनाए गए।
- श्री राजकुमार यादव,

Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 107-112 pp.

- Singhal Vibha, Meena SC, Sharma KK and Ramani R. 2015. Lac integrated farming system (LIFS), In: Kumar Alok, Jaiswal A K, Singh Ak and Yogi R K (eds.), Advances in Lac Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 96-106 pp.
- Binsi P K, Nayak Natasha, Sarkar P C, Sahu Upali, Ninan George and Ravishankar C N, 2015. Comparative evaluation of gum arabic coating and vacuum packaging on chilled storage characteristics of Indian mackerel (Rastrelliger kanagurta), J. Food Sc. Tech, 3 December 2015.
- Sharma S C, Prasad N and Pandey S K. 2015. Lac Processing A Village Level Entrepreneurship, Kumar Alok, Jaiswal A K, Singh AK and Yogi R K (eds.), Advances in Lac Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 131 - 139 pp.
- Pandey S K, Prasad N and Sharma S C. 2015. Processing of Lac -Seedlac, Shellac, Bleached Lac and Lac Dye, Kumar Alok, Jaiswal A K, Singh AK and Yogi R K (eds.), Advances in Lac Production, Processing, Product Development and Value Addition, ICAR-IINRG, Ranchi, 118 – 130 pp.

Institute publications

Ms D Norris memorial lecture booklet on An Ecological Approach for Economic Development through Natural Resins and Gums, 12pp. Natural Resins and Gums ICAR-IINRG Newsletter, July- September 2015, 19(3), 08pp.

Promotion

- Sri D K Singh,TO promotedto the post of STO w.e.f. 01.01.2015
- Sri A K Sinha, TO promoted to the Translation post of STO w.e.f. 01.01.2015
- Sri Binod Kumar, TO promoted to the post of STO w.e.f. 27.12.2014
- Sri Choudhury, Tech. promoted Asstt. to the post of STA w.e.f. 01.07.2014
- Mandeshwar Singh, Tech.Asstt. Promoted to the post of STA w.e.f. 19.06.2014
- Sri R K Yadav, Tech.

Compiled, Edited and Produced by

Dr MZ Siddiqui Dr Alok Kumar Shri SS Bhat Dr Anjesh Kumar

Dr Anjesh Kumar

Photographs

Shri RP Srivastava

Published by

Dr KK Sharma

Director

ICAR-Indian Institute of Natural Resins and Gums, Namkum, Ranchi - 834 010, **Jharkhand**

Phone : 0651-2261156 : 0651-2260202 Fax E-Mail : iinrg@ilri.ernet.in

: director.iinrg@gmail.com

Visit us at : http://ilri.ernet.in



त. सहायक 29.06.2014 से व.त.सहायक बनाए गए।

विविध

पदभार ग्रहण

श्री सौरभ स्वामी ने दिनांक-09.10.2015 को वैज्ञानिक (कृषि रसायन) के पद पर संस्थान में योगदान दिया।

श्री असीस राउत ने दिनांक-12.10.2015 को वैज्ञानिक (कृषि रसायन) के पद पर संस्थान में योगदान दिया। Asstt. promoted to the post of STA w.e.f. 22.06.2014

Miscellanea

Joining

- 1. Sri Saurabh Swami joined The Institute to the post of Scientist (Agril. Chemical) on 09.10.2015
- 2. Sri Asish Rout joined the Institute to the post of Scientist (Agril. Chemical) on 12.10.2015